कहानियाँ ही कहानियाँ

(कक्षा 3–5)

बेसिक

नाम

पिता/माता का नाम

स्कूल का नाम

कक्षा

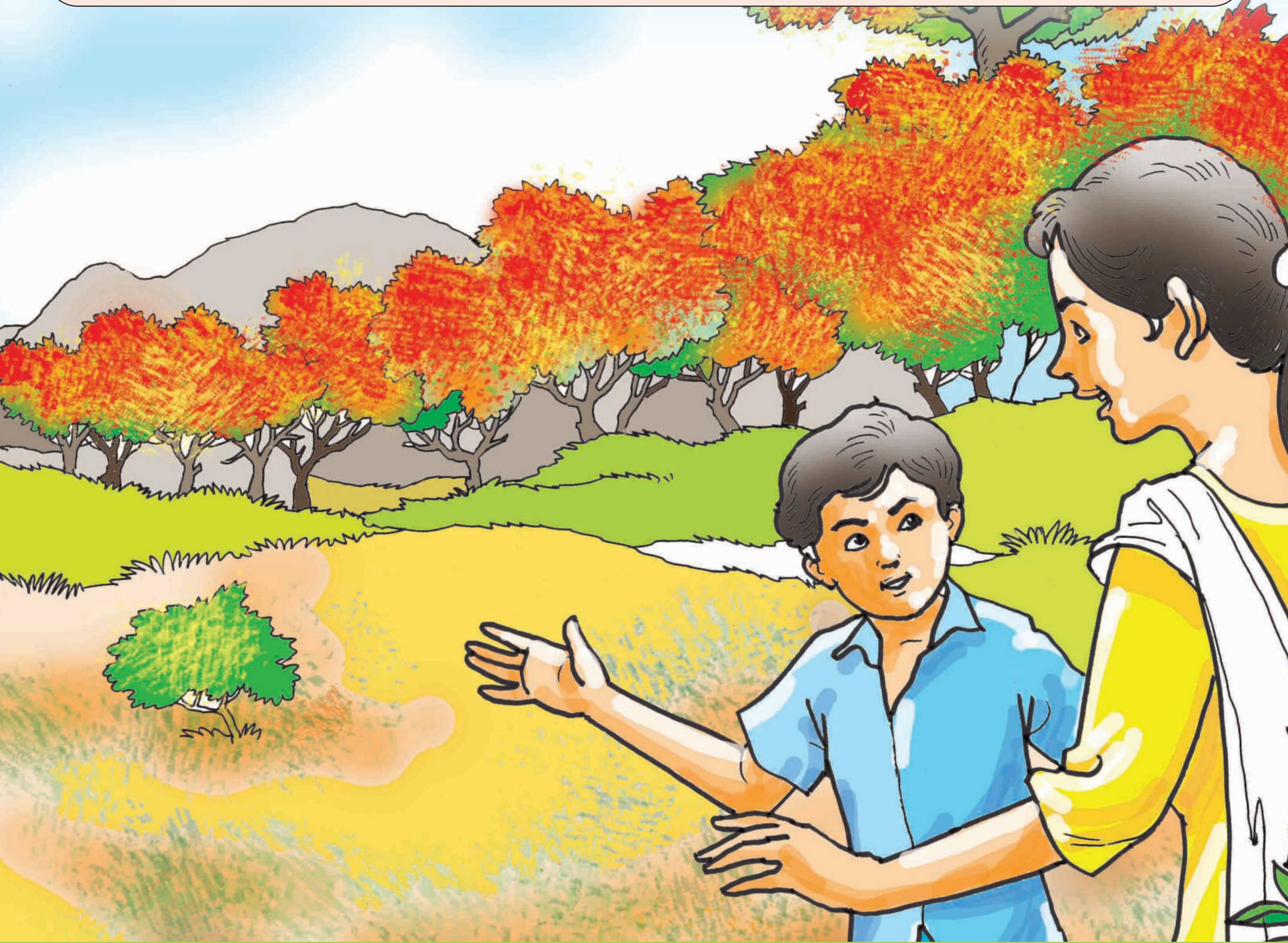

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

प्रथम रिसोर्स सेन्टर

रिमि की चित्रकला

रिमि बहुत अच्छा चित्र बनाती है। पत्तों का चित्र। फूलों का चित्र। अलग-अलग पक्षियों का चित्र। तरह-तरह के और भी चित्र। रिमि ने एक दिन सोचा - वह एक गुड़िया का चित्र बनाएगी। उसने हाथ, मुँह सब बनाया। गुड़िया

के कानों में बाली पहनायी। नाक में नथ पहनायी। बाल बाँधने के लिए धागा लगाया।

यह किसका चित्र बन गया? चित्र को देख कर रिमी के मुँह से निकला। मैं तो गुड़िया का चित्र बनाना चाहती थी।

चित्रांकन-पार्थो सेन

लेखन-प्रथम

गरमी

आज बहुत गरमी है। तेज़ धूप से हर कोई परेशान है। सभी अपने घरों में हैं। कोई चिड़िया भी बाहर दिखाई नहीं दे रही है।

रानी घर से बाहर निकली। वह पेड़ के नीचे चली गई। यहाँ भी बहुत गरमी लग रही है। वह नदी के किनारे चली गई।

वह नदी में कूद गई। देर तक पानी में तैरती रही। उसे तैरना अच्छा लगता है। पानी में तैरना गरमी से बचने का अच्छा तरीक़ा है।

चित्रांकन-अशोक शर्मा

लेखन-रुक्मिणी बनर्जी

आम

मैंने एक आम देखा। वह पेड़ पर बहुत ऊँचाई पर लगा है। मैं आम खाना चाहता हूँ। मैं क्या करूँ? मैं एक स्टूल लेकर आया। वह छोटा पड़ गया। मैं सीढ़ी लेकर आया। लेकिन यह भी बहुत छोटी है। मैंने एक पत्थर फेंका। वह आम तक नहीं पहुँच पाया।

प्रथम

अचानक तेज़ हवा चलने लगी। हवा से पत्ते हिलने लगे। टहनियाँ भी हिलने लगीं। हवा से आम भी हिलने लगे। इससे आम टूटकर नीचे गिर गए। अब मैं आम खा सकता हूँ।

चित्रांकन-अशोक शर्मा

लेखन-रुक्मिणी बनर्जी

सड़क किनारे

मैं सड़क के किनारे खड़ा हूँ। यहाँ बहुत कुछ देखने को मिलता है। धुआँ उड़ाती बसें और ट्रक। 'केंच-केंच' आवाज़ करती हुई बैलगाड़ी। तरह-तरह के लोग। तरह-तरह के कपड़े।

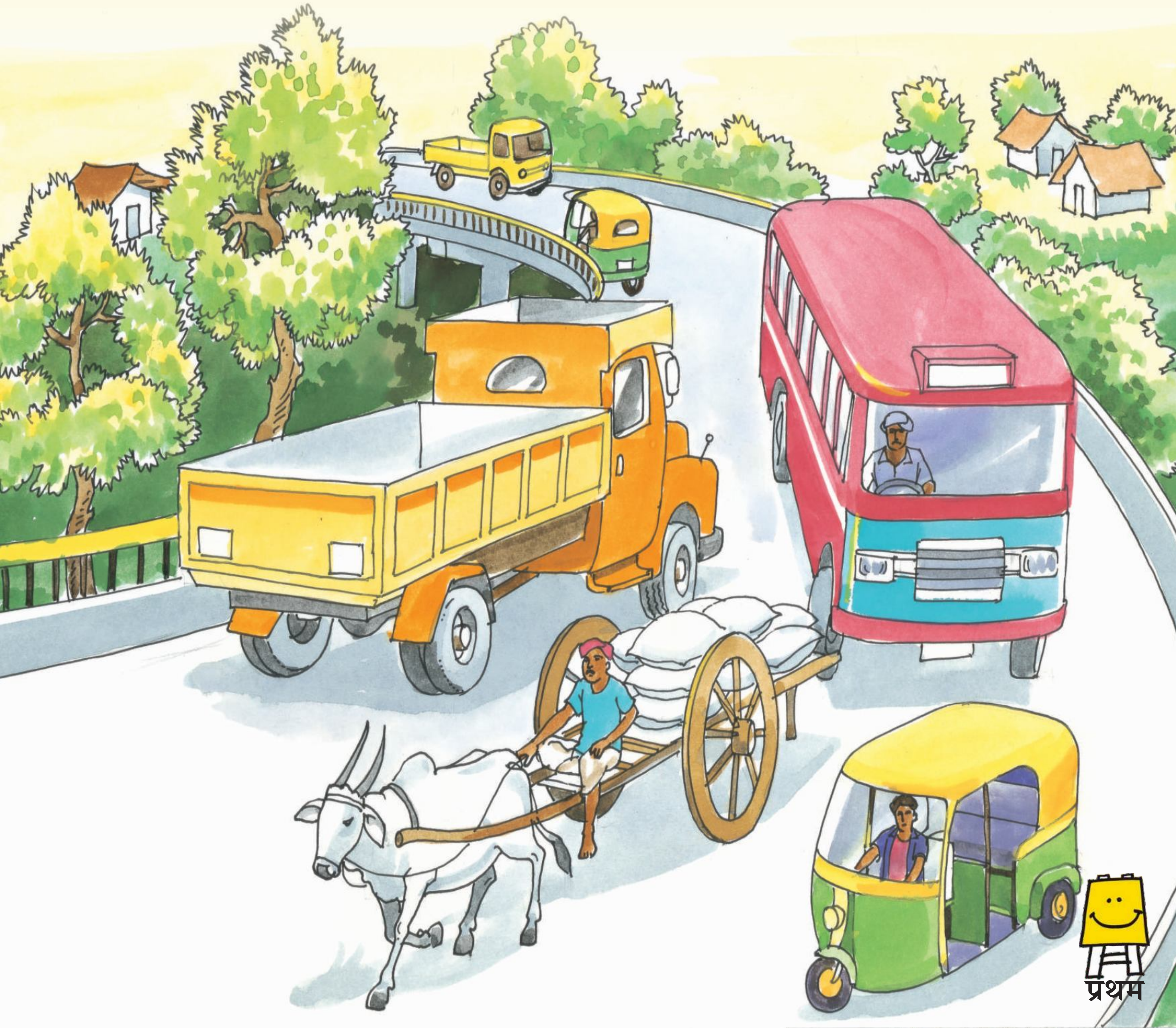

प्रथम

कोई पैदल चलता हुआ। कोई साइकिल से जाता हुआ।

कोई जल्दी-जल्दी जाता हुआ।

कोई धीरे-धीरे चलता हुआ। किसी के सिर पर बोझा है।

किसी के हाथों में कुछ भी नहीं। खड़े-खड़े देखने में अच्छा

लगता है।

चित्रांकन-पार्थो सेन

लेखन-प्रथम

बारिश

कल बारिश हुई थी। आज भी बारिश हो रही है। शायद कल भी बारिश होगी। आजकल बरसात का मौसम चल रहा है। कभी बारिश की बड़ी-बड़ी बूँदें गिरने लगती हैं। कभी छोटी-छोटी बूँदें गिरने लगती हैं। कभी बारिश तेज़ हो जाती है। कभी बूँदाबाँदी होने लगती है।

प्रथम

बारिश पेड़ों पर गिरती है। बारिश की बूँदें घास, मकान और बच्चों को भी भिगो देती हैं। मुझे बारिश अच्छी लगती है। क्या आपको भी बारिश अच्छी लगती है?

चित्रांकन-अशोक शर्मा

लेखन-रुक्मिणी बनर्जी

स्कूल में पहला दिन

मैं कल स्कूल जाऊँगी। वह मेरा स्कूल में पहला दिन होगा।

स्कूल के मेरे कपड़े भी नए हैं। मैं बैग लेकर स्कूल जाऊँगी।

मेरा बैग भी नया है।

प्रथम

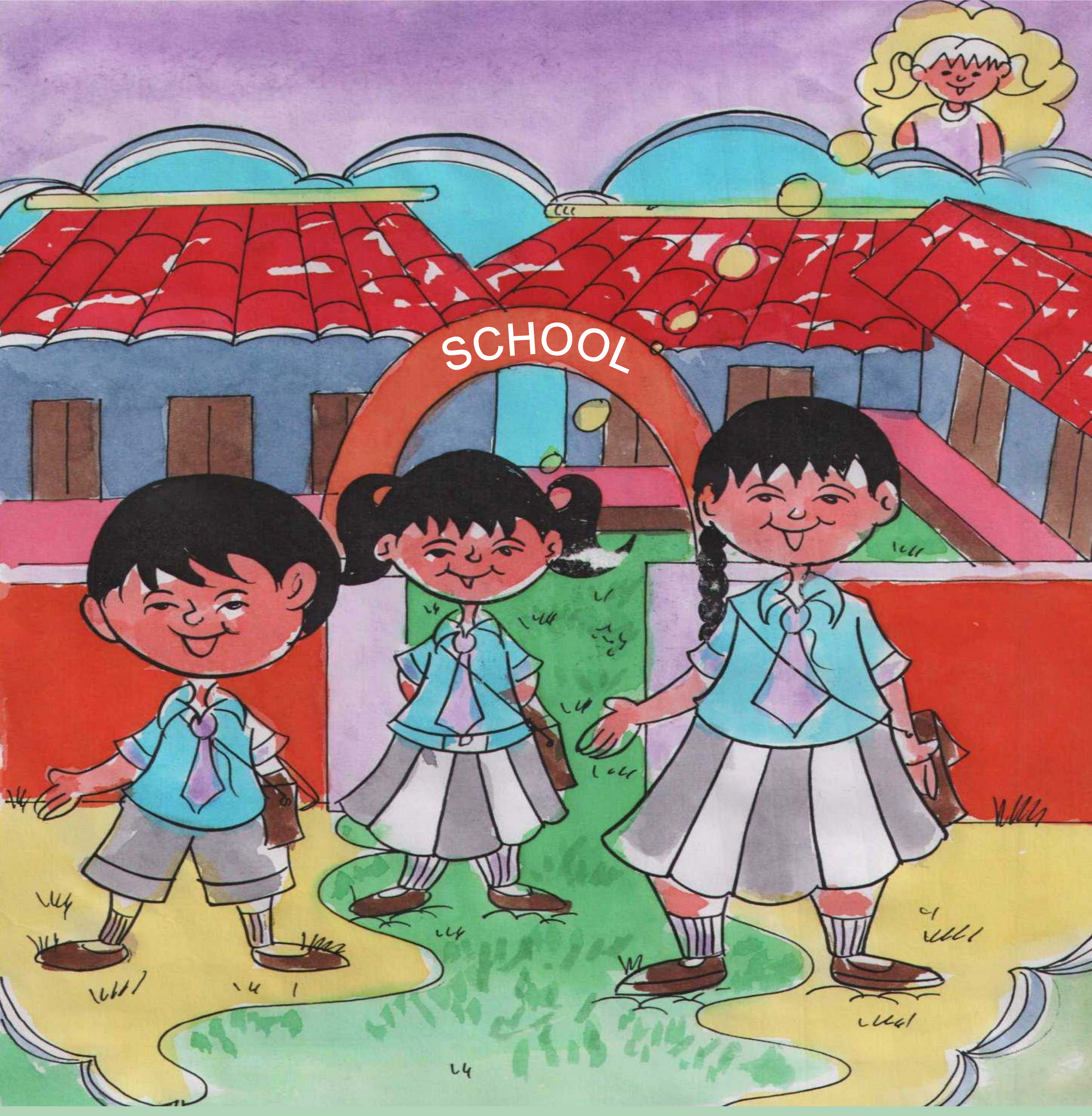

मैं भैया और दीदी के साथ स्कूल जाऊँगी। भैया ने कहा कि तुम्हें तेज़ चलना होगा। दीदी ने कहा कि तुम्हें देर नहीं करनी है। मैं कल का इंतज़ार कर रही हूँ। मैं स्कूल में अपने पहले दिन का इंतज़ार कर रही हूँ।

चित्रांकन-अशोक शर्मा

लेखन-रुक्मिणी बनर्जी

सपनों की बारिश

कमल आँगन में दोस्तों के साथ खेल रहा था। तभी उसने आसमान की ओर देखा। काले-काले बादल छाए हुए थे। उन्हें लगा कि शायद बारिश होगी। तभी नन्हीं-नन्हीं बूँदें गिरने लगीं। कमल और उसके दोस्त बारिश में भीगने लगे।

प्रथम

बारिश तेज़ हो गई। वे सभी बारिश का पानी एक दूसरे पर फेंकने लगे।

तभी उसकी आँख खुल गई। अरे वह तो सपना देख रहा था। पर सपने में भी भीगना उसे अच्छा लगा।

चित्रांकन-गरिमा चौहान

लेखन-प्रथम

बारिश में खेलना

मैं बारिश में खेलना चाहता हूँ। मेरी बहन भी बारिश में खेलना चाहती है। मेरे भाई को भी बारिश में खेलना अच्छा लगता है। लेकिन माँ कहती हैं कि बारिश में मत खेलो। पिताजी कहते हैं कि बारिश में मत खेलो। दादी और दादा भी बारिश में खेलने से मना करते हैं।

हम इंतज़ार कर रहे हैं। माँ काम करने लग जाएँ। पिता जी भी काम करने लग जाएँ। दादी और दादा भी कुछ काम करने लग जाएँ।

वाह! अब कोई भी नहीं देख रहा है। मेरी बहन, भाई और मैं घर से बाहर निकल आए हैं। हम बारिश में खेलने लगे हैं।

चित्रांकन-अशोक शर्मा

लेखन-रुक्मिणी बनर्जी

नदी किनारे

कुछ औरतें नदी किनारे आई हैं। कोई बर्तन माँझ रही है। कोई कपड़े धो रही है। कोई मटका लेकर पानी भरने आई है। कोई नाव चला रही है। कोई मछलियाँ पकड़ रही है। काम के साथ-साथ बातें भी कर रही हैं। घर की बात, दुकान की बात, काम की बात। गाँव की बात, देश दुनिया की बात।

प्रथम

बच्चों ने पानी में छलाँग लगाई है। पानी की छींटें उछल पड़ी हैं चारों तरफ़। मौसी ने डाँट लगाई।

पर बच्चे कहाँ मानने वाले हैं। वे फिर भी नदी में छलाँग लगा रहे हैं। तभी कमला भाभी ने मौसी पर पानी की छींटे बरसा दी। दूसरी औरतें भी पानी के साथ खेलने लगीं। काम के साथ-साथ खेल भी।

चित्रांकन-पार्थो सेन

लेखन-प्रथम

नारियल का पेड़

नाना जी के बग़ीचे में बहुत सारे पेड़ हैं। वह अपने हाथों से पेड़-पौधे लगाते हैं। बग़ीचा हमेशा हरा-भरा रहता है। पौधों में पानी भी अपने हाथों से देते हैं। मैं दोस्तों के साथ बग़ीचा देखने गया। नाना जी नारियल का एक छोटा पौधा लगा रहे थे। नाना जी से मेरे एक दोस्त ने

पूछा – नारियल का फल कब आएगा? आप इस पेड़ का फल खा पाएँगे? यह बात सुनकर नाना जी हँसने लगे। उन्होंने हमें अपने पास बुलाया और बोले – उस नारियल के पेड़ को देख रहे हो? क्या वह पेड़ मैंने लगाया था? नहीं न, लेकिन उसका फल मैं खा रहा हूँ।

चित्रांकन–मित्रारुण हलदर

लेखन–प्रथम

झूला

बरसात का मौसम था। मैं अपनी सहेली रेनू के साथ घूमने गई। घर के नज़दीक ही एक बग़ीचा था। हम वहाँ पहुँचे। वहाँ एक बड़ा-सा आम का पेड़ था। हम ने पेड़ पर झूला डालने की सोची। पर कैसे? हमें एक तरकीब सूझी। हमने अपनी-अपनी चुन्नी को एक साथ बाँधा। चुन्नी का पेड़ पर झूला डाल दिया। सबसे पहले रेनू झूले पर बैठी। कुछ देर

तक वह झूलती रही। फिर मेरी बारी आई। मैं जैसे ही झूले पर बैठी, गिर पड़ी। चुन्नी की गाँठ खुल गई थी। मुझे गिरते देख रेनू ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगी। उसे हँसता देख मेरी भी हँसी फूट पड़ी।

चित्रांकन-गरिमा चौहान

लेखन-तबस्सुम ख़ान

फूलों से बातें

तनिशा के घर के पास एक बग़ीचा है। वह बग़ीचा बहुत ही सुंदर है। तनिशा के घर की खिड़की से बग़ीचा दिखाई देता है। खिड़की के पास फूलों की कई डालियाँ हैं। उन पर रंग बिरंगे फूल खिले हैं। सफ़ेद, पीले, नीले और लाल फूल। हरी-हरी पत्तियों पर फूल बहुत सुंदर लगते हैं। वे दिन में

प्रथम

मुरझा जाते हैं। रात में वे खिलते हैं। तनिशा फूलों से बातें करती है। फूलों से बातें करने में उसे बहुत मज़ा आता है। जब तनिशा उनसे बातें करती है, वे ज़ोर-ज़ोर से हिलने लगते हैं।

चित्रांकन-पार्थो सेन

लेखन-प्रथम

ठंड

आज बहुत ठंड है। सोनू ने स्वेटर पहना है। फिर भी उसे ठंड लग रही है। उसने टोपी पहन ली। लेकिन उसे ठंड लगनी कम नहीं हुई। उसने जुराब भी पहन ली।

प्रथम

सोनू के दादाजी उसके लिए एक चादर लेकर आए।

दादाजी ने सोनू को चादर ओढ़ा दी। दादाजी ने आग जलाई। वे दोनों आग के पास बैठ गए। अब उन्हें ठंड नहीं लग रही है।

चित्रांकन-अशोक शर्मा

लेखन-रुक्मिणी बनर्जी

सींग

मोहन के घर में एक गाय है। गाय के सिर पर दो सींग हैं। सींग और भी जानवरों के होते हैं - भैंस, बैल, भेड़, बकरी आदि। मोहन ने चित्र में देखा था कि हिरणों के भी सींग होते हैं। हिरणों के सींग बहुत सुंदर होते हैं। पेड़ की डालियों के जैसे टेढ़े-मेढ़े। मोहन को हिरन के सींग देखने का मन

हुआ। वह पिता जी के साथ सर्कस देखने गया। वहाँ उसने बहुत सारे जानवर देखे। पर किसी के सिर पर सींग नहीं थे । वह सोचने लगा कि सींग कहाँ चले गए। अचानक एक हिरण छलाँग मारता हुआ उसके सामने आया। मोहन ने उसे पत्ता खिलाया। मोहन को बहुत मज़ा आया। वह नाचने लगा। उसे नाचता देख सर्कस के हाथी, घोड़े, हिरण सभी नाचने लगे।

चित्रांकन-मित्रारुण हलदर

लेखन-प्रथम

नई साइकिल

रवि को एक नई साइकिल मिली। उसकी चाची ने यह साइकिल उसे दी है। साइकिल पाकर रवि बहुत खुश हुआ। वह आँगन में ही साइकिल दौड़ाने लगा। सहायता के लिए चाचीजी आगे आईं। चाचीजी रवि को साइकिल चलाना सिखाने लगीं। रवि साइकिल चलाता और उसकी बहन सोनी ताली बजाती । झूमरी गाय बड़ी-बड़ी आँखों से देखती

रहती। भोलू रवि की साइकिल के पीछे-पीछे दौड़ता रहता। नानी खाट पर बैठी मज़े से देखती रहतीं।

एक दिन रवि गिर पड़ा। भोलू भौं-भौं करने लगा। झूमरी 'हम्बा हम्बा' बोल उठी। सोनी तालियाँ बजाने लगी। रवि को समझ में नहीं आया कि अब वह क्या करे?

चित्रांकन-गरिमा चौहान

लेखन-प्रथम

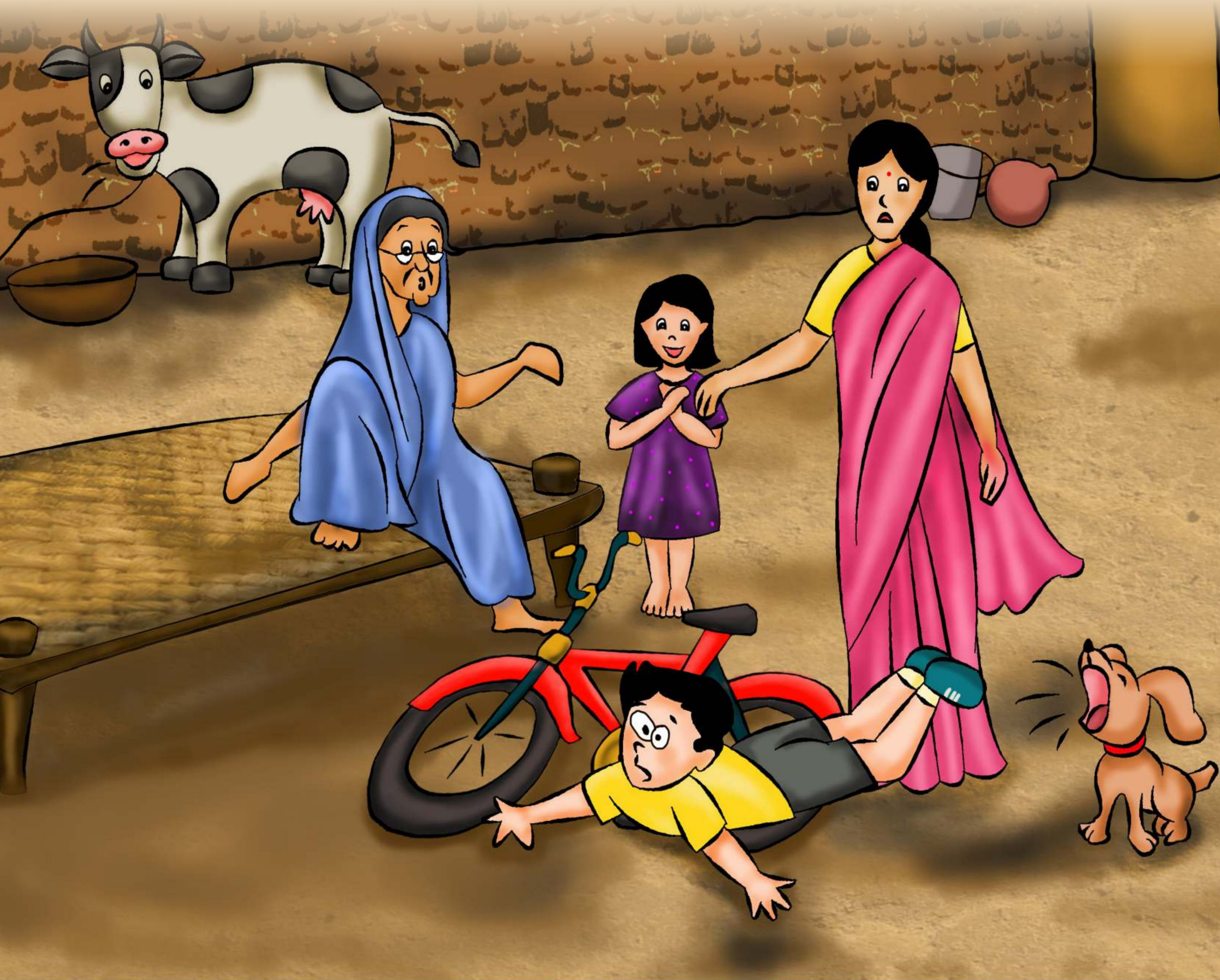

टूटू खेलना चाहता है

टूटू खेलना चाहता है। लेकिन खेले किसके साथ! उसका कोई दोस्त नहीं है। उसे दोस्तों की ज़रूरत है। वह पिल्ले के पास गया। पिल्ला भाग गया।

टूटू बिल्ली के बच्चे के पास गया। वह दीवार के ऊपर कूद गया। टूटू मछली के पास गया। वह तैर कर नदी के बीच में

चली गई। टूटू तितली के पास गया। तितली उड़ गई। टूटू ख़रगोश के पास गया। वह उछलता हुआ भाग गया।

टूटू को खेलने के लिए कोई दोस्त नहीं मिला। वह दुखी हो गया। वह घास पर लेट गया। उसने आँखें बन्द कर लीं। कुछ देर बाद उसने आँखें खोलीं। उसे बहुत आश्चर्य हुआ। वहाँ उसके दोस्त पिल्ला, बिल्ली का बच्चा, मछली, तितली और ख़रगोश थे। वे सभी उसके साथ खेलना चाहते थे।

चित्रांकन–अशोक शर्मा लेखन–रुक्मिणी बनर्जी

काली बकरी और सफ़ेद बकरी

घास का मैदान था। मैदान में एक नाले के ऊपर एक पुल था। पुल बहुत पतला-सा था। पुल की एक तरफ़ एक सफ़ेद बकरी और दूसरी तरफ़ एक काली बकरी थी। फिर पुल के बीचों-बीच ये दोनों बकरियाँ आ गईं। सफ़ेद बकरी मिमियायी - मैं। काली बकरी ने कहा - नहीं, मैं आगे जाऊँगी।

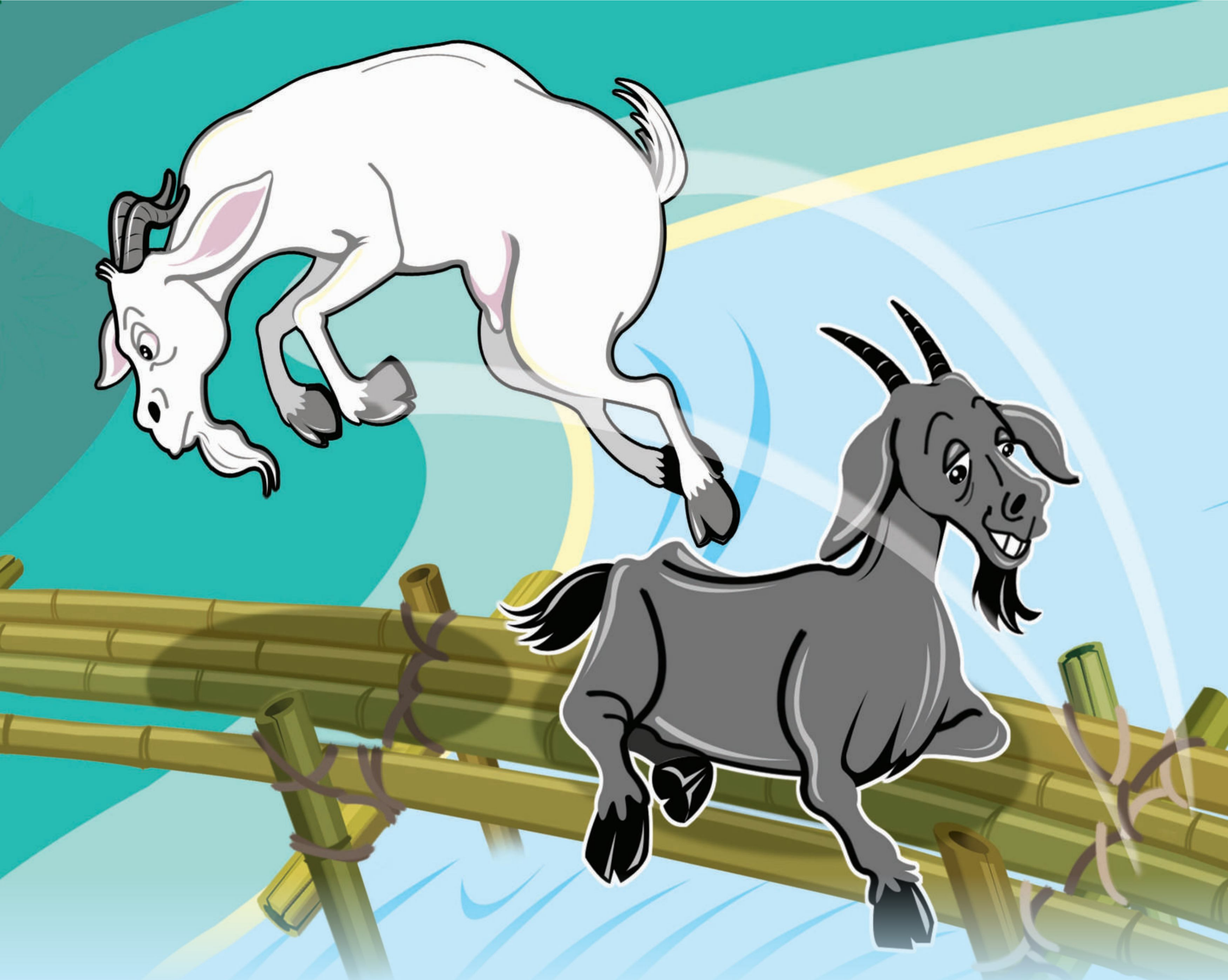

दोनों ने फिर सोचा – अगर लड़ाई हुई तो हम दोनों ही पानी में गिरेंगी। उन्हें एक उपाय सूझा। काली बकरी बैठ गई। सफ़ेद बकरी उसके ऊपर से पार हो गई। फिर काली बकरी भी खड़ी होकर पुल के पार चली गई

चित्रांकन-मित्रारुण हलदर

लेखन-प्रथम

कबूतर और जाल

एक पेड़ पर बहुत सारे कबूतर रहते थे। एक दिन एक शिकारी आया। शिकारी ने उस पेड़ के नीचे बहुत सारा दाना डाला। उन दानों पर उसने जाल बिछा दिया। दाना देख कबूतर बड़े खुश हुए। उड़ कर आ गए दाना चुगने। दाना चुगते हुए वे जाल में फँस गए। सारे कबूतर जाल से निकलने के बारे में सोचने लगे।

प्रथम

उनके मुखिया ने एक तरकीब सुझाई। कबूतरों ने एक, दो, तीन की गिनती करते हुए एक साथ उड़ने की कोशिश की। वे जाल लेकर उड़ गए। शिकारी हैरत से आसमान की ओर देखता रह गया। कबूतरों का झुंड उड़ते-उड़ते अपने दोस्त चूहों के पास पहुँचा। चूहों ने अपने दाँत से जाल कुतर दिए।

चित्रांकन-मित्रारुण हलदर

लेखन-प्रथम

तोते की दोस्ती

सोनू के घर के पास एक बाग़ था। वह रोज़ बाग़ में खेलने जाता था। वहाँ आम के कई पेड़ थे। पेड़ों पर आम आ गए थे। आम पकने लगे। आम की खुशबू बाग़ में फैल गई। सोनू

का मन आम खाने का हुआ। वह पेड़ के पास पहुँचा। पेड़ पर एक तोता रहता था। उसने सोनू को देखा। तोते ने कुछ आम नीचे गिरा दिए। सोनू ने मज़े से आम खाए। सोनू की तोते से दोस्ती हो गई है। तोता हर रोज़ चोंच मारकर आम गिराता है। सोनू मज़े से अब आम खाता है। सोनू भी तोते के लिए हरी मिर्च लेकर आता है।

चित्रांकन-पार्थो सेन

लेखन-रेखा रोत

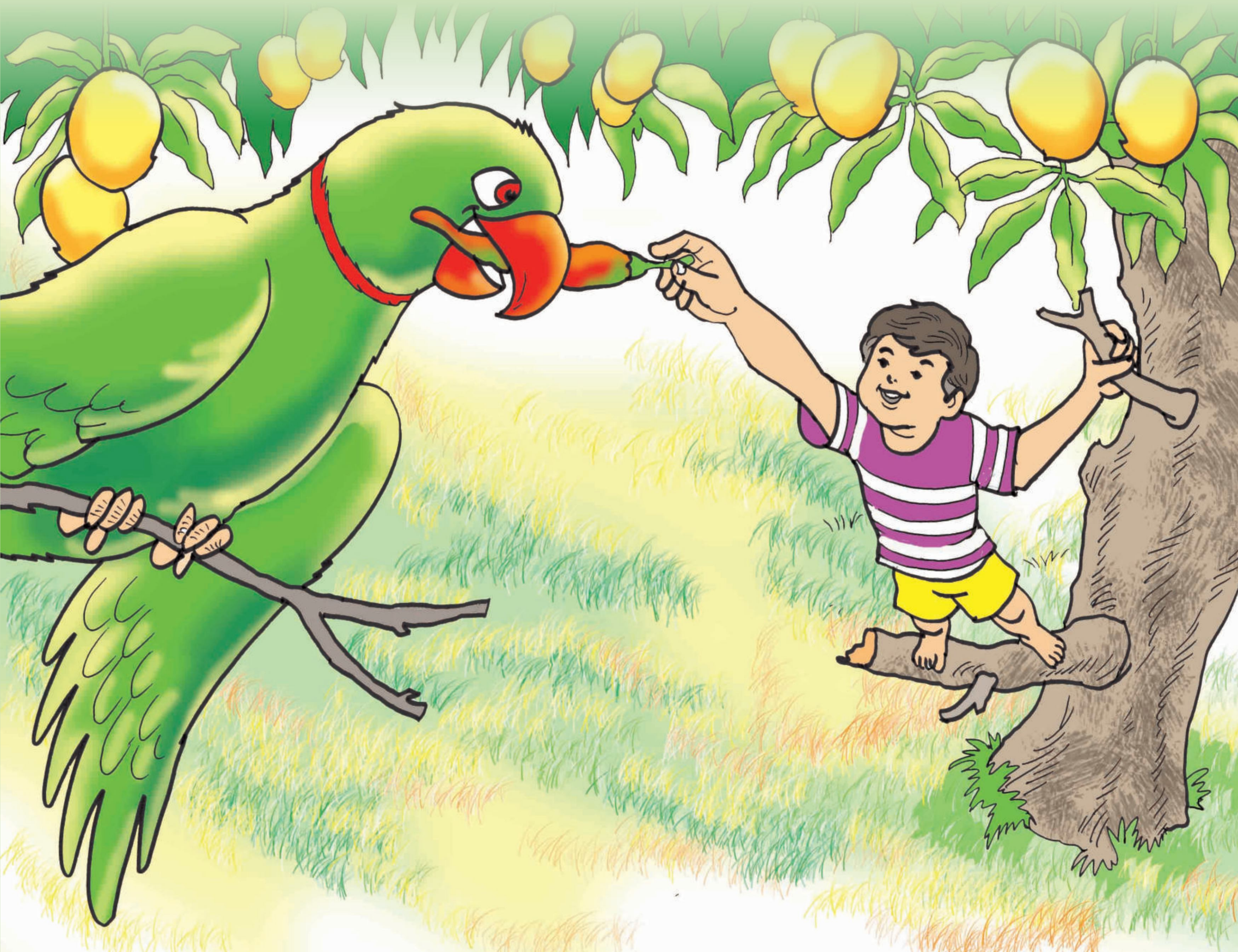

जंगल की आग

एक बार जंगल में आग लग गई। सभी पशु–पक्षी डर गए। जंगल में भगदड़ मच गई। अपनी–अपनी जान बचाने के लिए सब भागने लगे। चीं–चीं चिड़िया पास की नदी से पानी लाई। वह चोंच में पानी भरकर लाई। पानी आग में डालने लगी। उसे ऐसा करते देखा तो बंदर, भालू, हाथी सब ने समझाया। वे चीं–चीं से बोले–मूर्ख चिड़िया अपनी जान

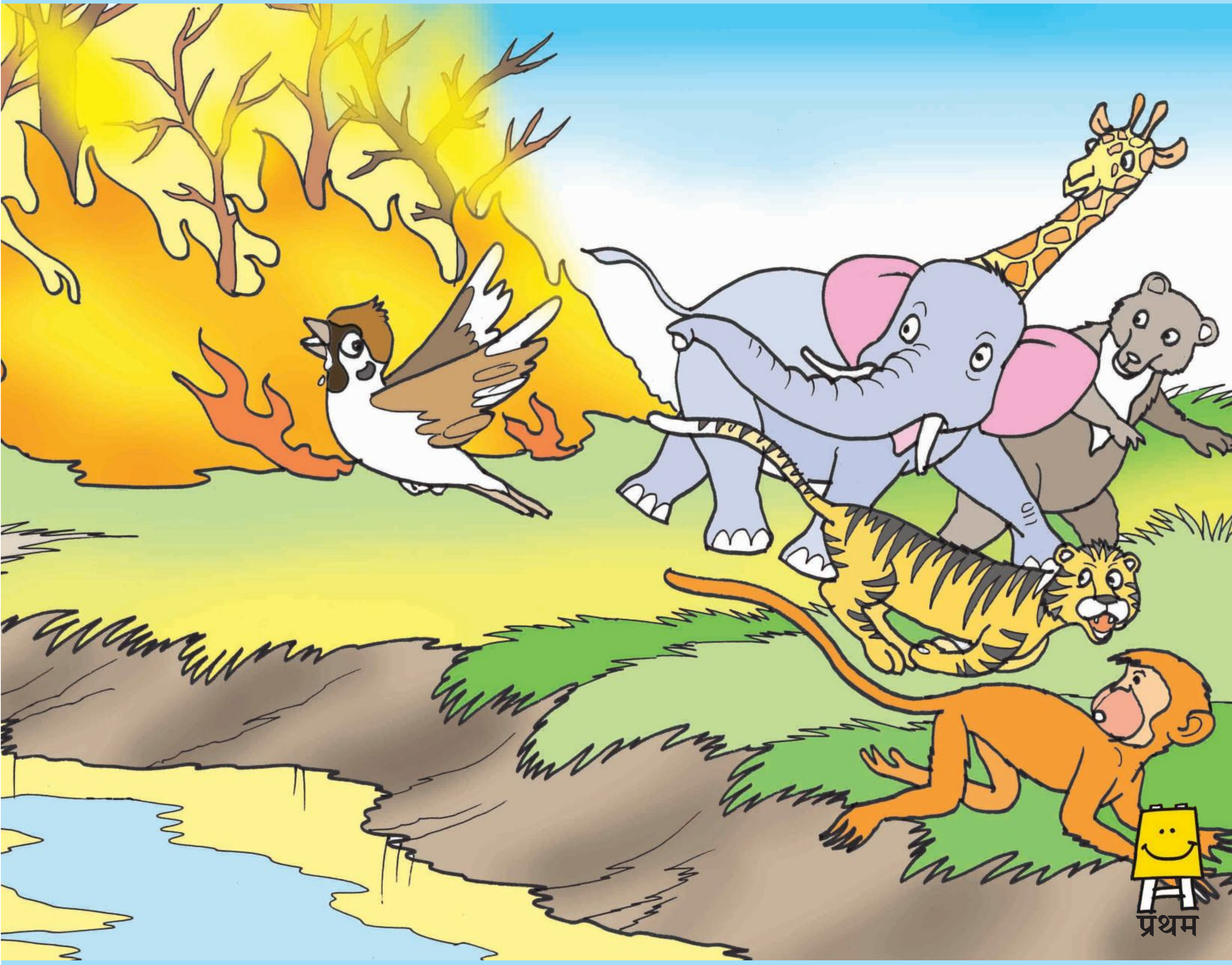

प्रथम

बचाओ। भागो यहाँ से। आग नहीं बुझेगी। चिड़िया बोली- मुझे पता है मेरे अकेले करने से यह नहीं होगा। मगर हम सब मिलकर कोशिश करें तो आग बुझ जाएगी। चिड़िया की बात उन्हें समझ में आ गई। सब नदी की तरफ़ गए। सबने मिलकर कोशिश की। आग बुझ गई।

चित्रांकन-पार्थो सेन

लेखन-विकेश कुमार साद

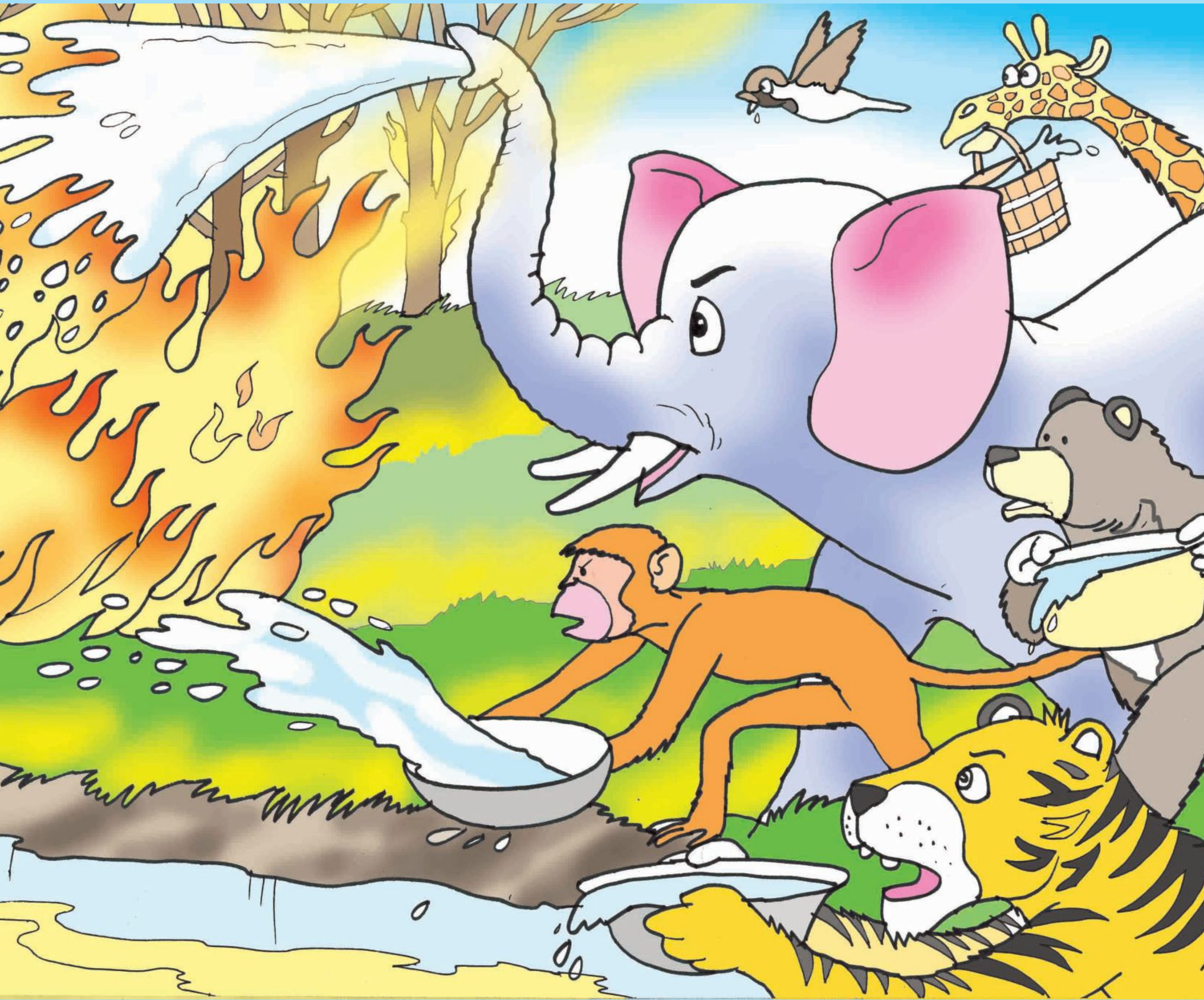

कौन गिराता है बाल्टी?

गाँव में एक कुआँ था। उस कुएँ से लोग पानी भरने आते थे। कुएँ में कई तरह के जीव-जन्तु रहते थे। बाल्टी जैसे ही कुएँ में गिरती हलचल-सी मच जाती। किसी को कुछ समझ नहीं आता। कुएँ के जीव-जन्तु डर जाते। यह रोज़ की बात थी। एक दिन जैसे ही बाल्टी गिरी। रानी मछली उछलकर बाल्टी में बैठ गई। धीरे-धीरे बाल्टी ऊपर की ओर आ गई। औरत ने

प्रथम

बाल्टी में मछली देखते ही रस्सी छोड़ दी। बाल्टी वापिस कुएँ में जा गिरी। मछली ने बाहर की दुनिया देख ली थी। उसने सभा बुलाई। उसने सबको बताया कि कुएँ के बाहर भी एक दुनिया है। वहाँ लोग रहते हैं। अब सब समझ चुके थे कि बाल्टियाँ कौन गिराता है।

चित्रांकन-पार्थो सेन

लेखन-नृसिंह वडेरा

बन गई बात

मिट्टी रो रही थी। रेत ने कहा - हम एक हो जाएँ तो बात बने। दोनों एक हो गईं। वे आग में पक गईं। वे ईंट बन गईं।

एक ईंट ने दूसरी ईंट से कहा - हम एक हो जाएँ तो बात बने। ईंट से ईंट जुड़ने लगीं। देखते ही देखते दीवार बनने लगी। कुछ ही देर में दीवार भी बन गई।

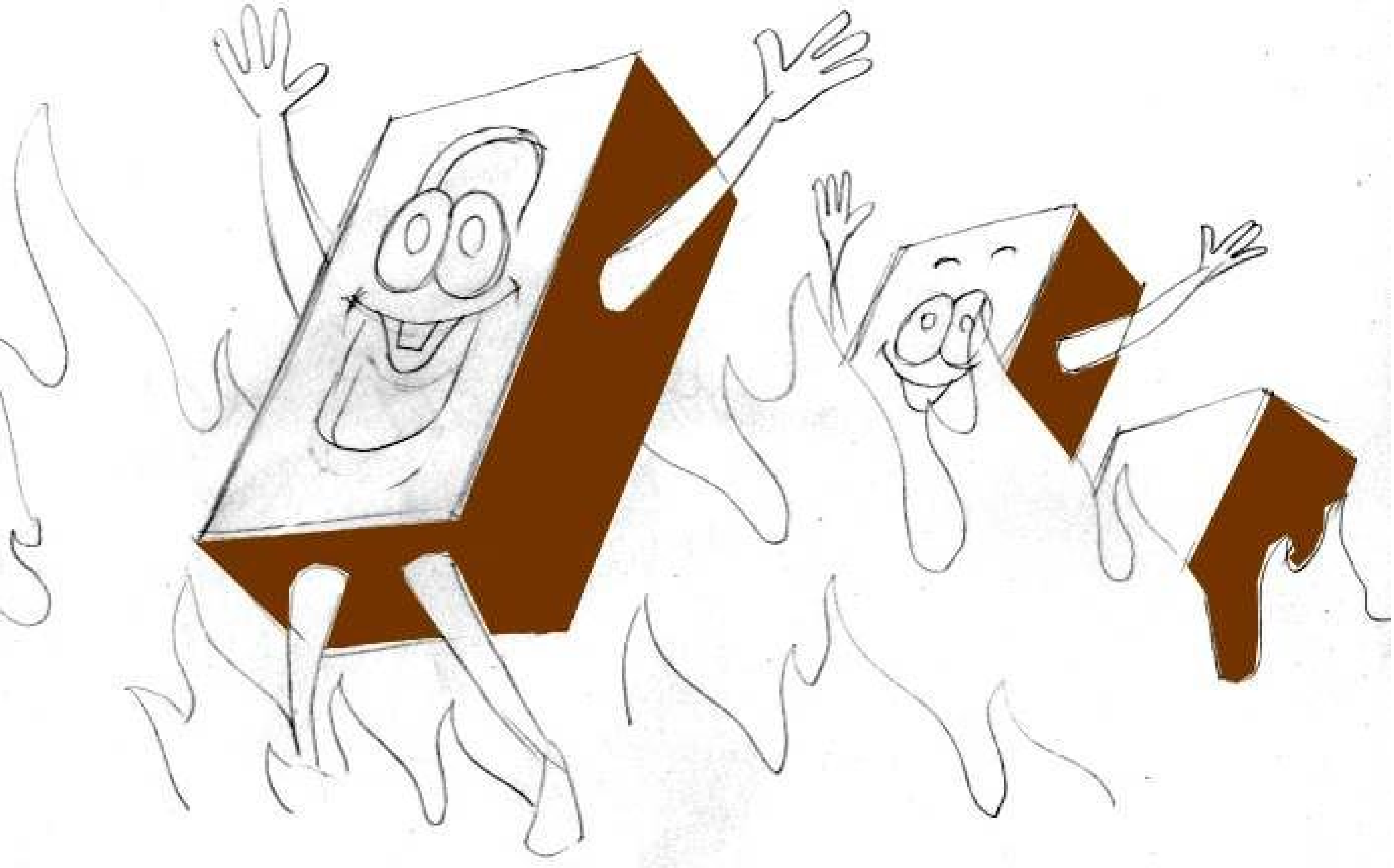

प्रथम

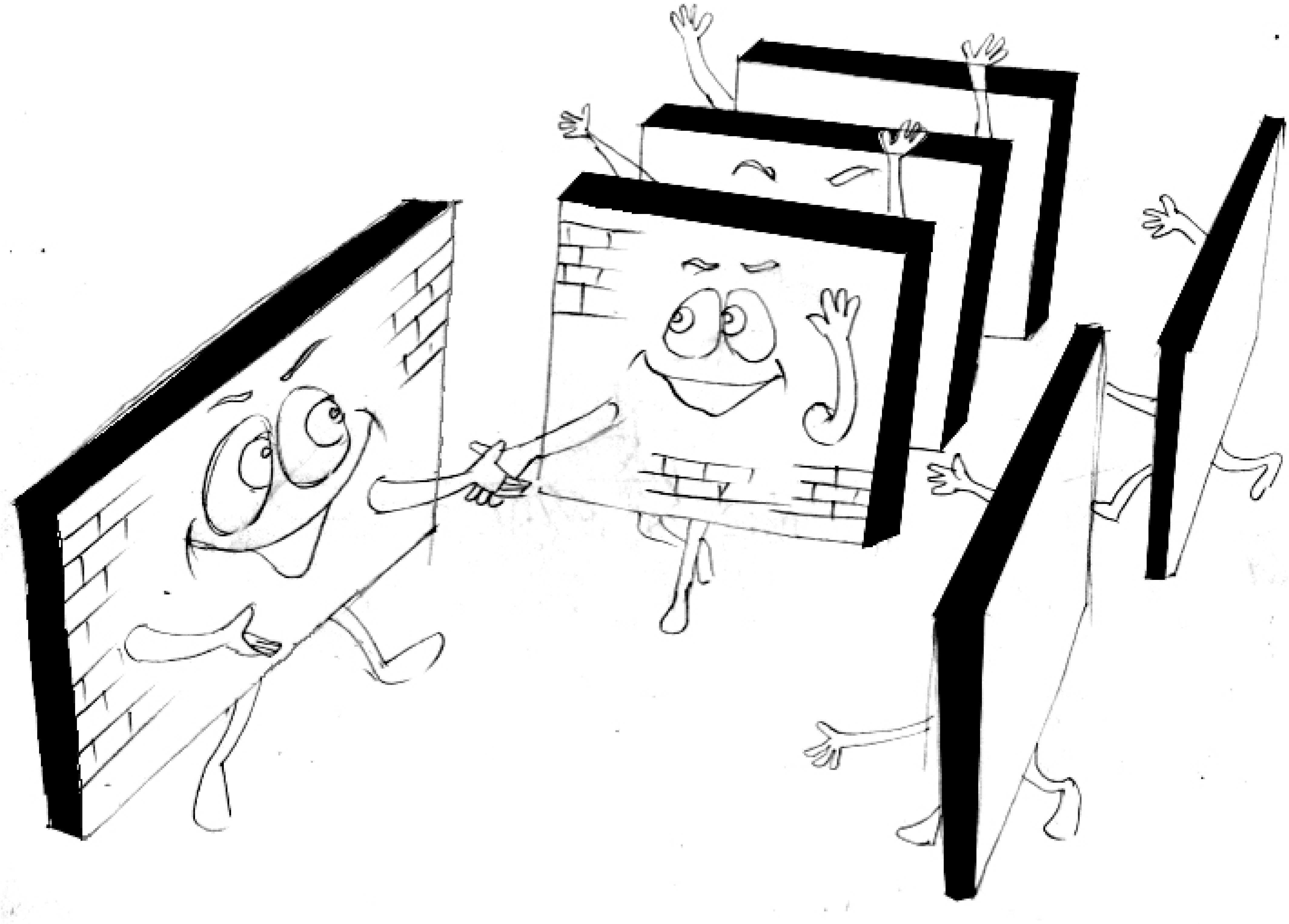

एक दीवार से दूसरी दीवार ने कहा - हम एक हो जाएँ तो बात बने। दीवार से दीवार जुड़ने लगीं। यह क्या! घर बन गया। बेजानों ने इंसानों को बसेरा दे दिया।

चित्रांकन-पार्थो सेन

लेखन-मनोहर चमोली 'मनु'

आग का फूल

मार्च महीने का आख़िरी सप्ताह था। चीनू और वीना जंगल में घूमने गए। दूर से जंगल लाल ही लाल दिख रहा था। चीनू बोला- दीदी, लगता है जंगल में आग लग गई है। वीना ने बताया - नहीं चीनू, आग नहीं लगी है। ये सभी पेड़ हैं। लाल रंग के फूलों से लदे हुए पेड़। दूर से देखने पर ऐसा लग रहा

प्रथम

है, जैसे आग लगी हो। दीदी यह किस चीज़ के पेड़ हैं? चीनू ने पूछा। वीना मुस्कराते हुए बोली- यह पलाश के पेड़ हैं। इन्हें 'जंगल की आग' भी कहते हैं। लाल फूल हमें आग जैसे लगते हैं। चीनू जंगल की आग को करीब से देखने के लिए उत्साहित हो गया।

चित्रांकन-पार्थो सेन

लेखन-कैलाश

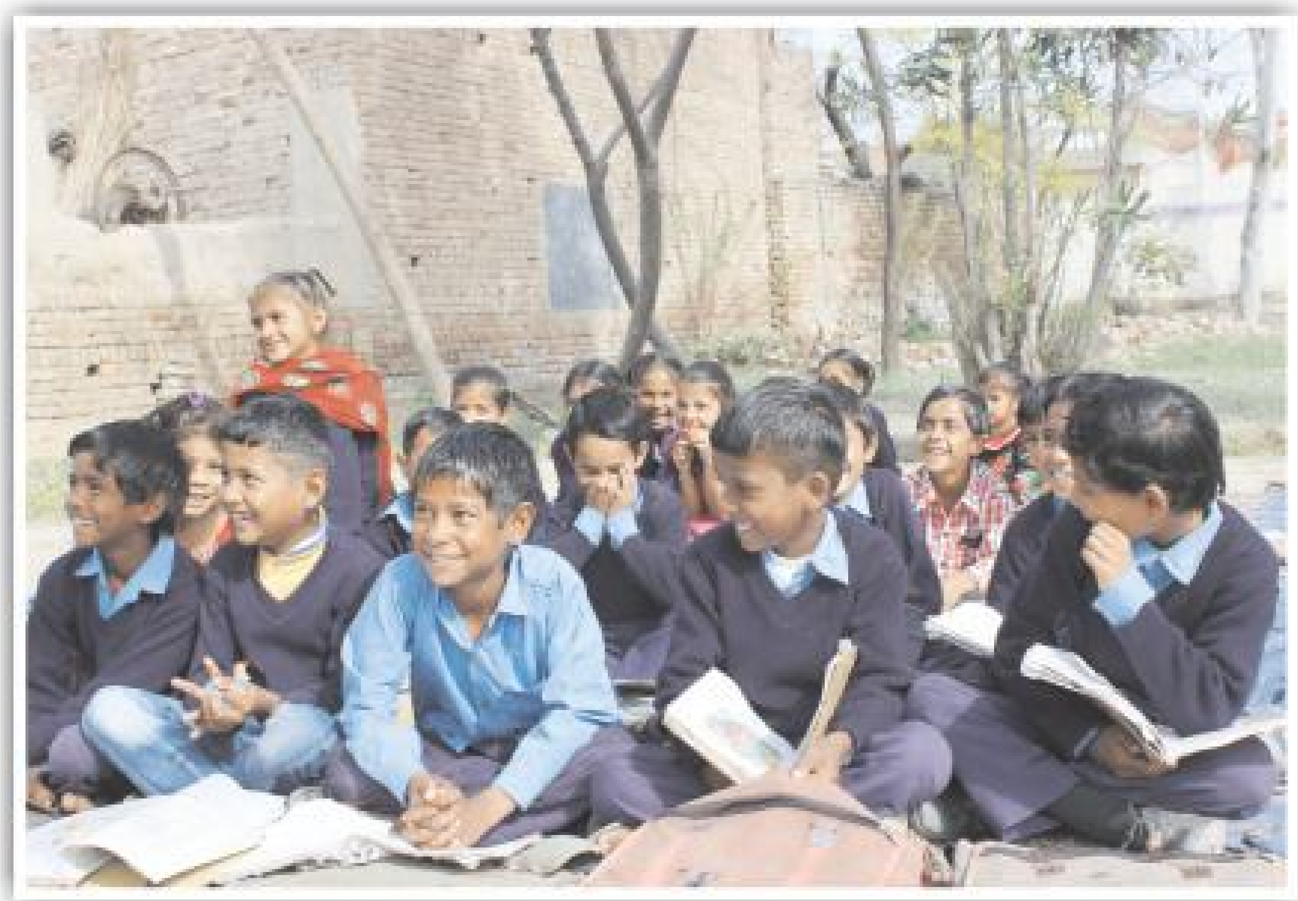

राज्य परियोजना कार्यालय, सर्व शिक्षा अभियान एवम् राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान
डी.पी.ई.पी. भवन, शिक्षा निदेशालय, लालपानी, शिमला - 171 001 (हि.प्र.)
ई-मेल: **spdssahp@gmail.com**

Ptd. by: **new era graphics.** Ph.: 0177 2628276